An Open Letter from Dalit Women to DU

An Open Letter from Dalit Women Workers of a DU Hostel to the University Community

We are workers employed at the Undergraduate Hostel for Girls, DU. We have laboured very hard in this hostel. They are throwing us out now. Will you not speak up against this? We don’t ask you to do much, just ask the authorities the reason for our dismissal from work.

We had left no stone unturned to care for you children. Cleanliness was ensured to anyone who asked for it. We made you children laugh when you were gripped by sadness. We patiently served the ones who fell ill. We were right there for you when you needed us. Today we ask very little from you, to stand by us when we need you the most.

After the death of the Provost's mother her helper was assigned the job of being our supervisor. After a couple of months her behavior towards us started deteriorating and she even started using foul words to address us. "You Chammars don't have brains. You clean Latrines and Drains. How do people even think of drinking water served by you?" etc. As if we played no role in keeping this hostel clean and dirt free. She would treat us as untouchables and maintain a distance from us. When we couldn't bear with the discrimination and foul language, we complained to the Provost but she did not pay attention. Then we decided to contact the SC/ST Commission to lodge our grievances. When inquiries were initiated by the commission we were asked by the Delhi University officials to dislodge our complaints saying that the accused was an old woman and could be jailed in the case. We withdrew our complaint as we did not want to do wrongly by anyone. Soon after the settlement was reached we started hearing talk of our contracts being terminated. On 1st January 2016 we were all dismissed after clearing our dues on 31st December. Eight of our women workers and two male workers weren't allowed to enter the premises on 1st morning. It's almost been a month since then, we are still sitting here demanding justice.

We have seen the hostel from within while we worked there. They waste food but won't give it to the students or us and we were not even offered a cup of tea while on duty. We had no benefits of ESI and PF. Although we worked here day and night and even on public holidays, we neither received any Identity Cards nor were our jobs made permanent. We had to pay for our own medicines and first aid if we got injured while working. We spent 8-10 hours working in the hostels and would then go to serve at the residences of the Provost and the Warden for which we were not given any extra money. We were made to work longer if they had guests. To safeguard our bread and butter we tolerated all this without complaints. When having reached the

threshold of our patience we finally did complaint, what we received was not a solution but punishment.

It is this University which is primarily responsible for our present condition, where they teach about knowledge but they themselves do injustice. Is this what the university teaches you, to insult, to exploit someone who earns their bread by humble labour, and to dismiss them if they demand justice? We are working women and we run our houses by our wages. Though we have been dismissed from our work we still have to pay house rent, the expenses of our children and our daily bread. Although one of the hostels in this complex is named after Ambedkar, right in its vicinity we are discriminated and exploited on the basis of our castes. We aren’t literate but the contradiction of this is clear before our eyes. How can you then turn a blind eye to this injustice?

We hope that you will stand with us to fight this injustice.

Regards,

Manju, Vimlesh, Shanti, Kanta, Phula, Pinki, Putul and Asha.

एक दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रावास की दलित महिला मज़दूरों द्वारा विश्विद्यालय समुदाय को खुला पत्र

हम अनडर ग्रेजुएट होस्टल फॉर गर्ल्स की कर्मचारी हैं| हमने इस हॉस्टल में बहुत मेहनत की है| आज जब ये हमें निकाल रहे हैं तो क्या आप कुछ नहीं बोलेंगे? ज्यादा नहीं तो दो लव्ज़ में पूछ तो लीजिये, “मैडम, इन लोगों को क्यों निकाला गया है?”

आप बच्चों के लिए बहुत कुछ किया है| जिसे सफाई चाहिए थी उसे बेहतर से बेहतर सफाई दी है| जो दुखी था उसे हसाया है, जिसकी तबियत ख़राब थी उसकी सेवा की है| हर सुख दुःख में में हम आपके साथ खड़े रहे| आज हमें आपके साथ की ज़रुरत है|

प्रोवोस्ट की माँ की मृत्यु के बाद उनकी सहकारी को हमारी सुपर्वाइज़र बना दिया गया| 2-3 महीने बाद उनका बर्ताव हमारे प्रति बेहद बुरा हो गया| वह हमें गालियाँ देतीं| कहतीं, "तुम चूड़े चमार लोगों का दिमाग नहीं होता| तुम लैट्रिन साफ़ करते हो, कचड़ा उठाते हो| तुम्हारे हाँथ का पानी भी लोग कैसे पी लेते हैं!" मानों हमारे सफाई किये बिना ही यह होस्टल इतना जगमगाता है, और सभी बच्चे और मैडम भी साफ़ सफाई से रहती हैं| वहीँ वह हमारे साथ छुआछूत का व्यवहार करती थीं और हमसे एक कोस की दूरी बना कर ही चलती थीं| जब यह व्यवहार हमारे लिए असहनीय हो गया तो हमने इसकी शिकायत प्रोवोस्ट मैडम से की| इन्होंने भी हमारी बात का अनसुना कर दिया| इसके बाद हमने एससी/एसटी कमीशन में अपनी शिकायत दर्ज कराने का फैसला लिया| वहां से पूछताछ शुरू होने पर इन्होंने दबाव के अन्दर हमसे समझौता करने की बात उठाई| प्रोवोस्ट के दफ्तर में हम कुछ लोगों और सुलभ के हमारे अधिकारीयों को ले जा कर हमसे कहा गया की वह बुज़ुर्ग हैं और हमारी शिकायत से उन्हें जेल हो सकती है, इसलिए हम अपनी शिकायत वापस लेलें| किसी का बुरा ना चाहते हुए हमने समझौता मान लिया| लेकिन इसके एक दो दिन बाद से ही हमें खबर आने लगी की हमारा कॉन्ट्रैक्ट ख़त्म होने वाला है| 31 दिसंबर को हमारी सैलरी दे कर 1 जनवरी को जब हम काम पर आये तो हम 8 औरतों और 2 आदमियों को गेट के अन्दर नहीं जाने दिया गया| तब से आज एक महिना होने को आया हम इसी गेट के सामने अपने लिए न्याय मांगती हुई बैठी हैं|

होस्टल में काम करते हुए हमने अन्दर की कई बातें देखि हैं| यह लोग खाना फ़ेंक देते हैं पर बच्चों को और हमें नहीं देते| काम करते समय एक कप चाय भी हमें नहीं दिया जाता था| ईएसआई-पीएफ भी कभी नहीं मिला| तीन साल लगातार यहाँ हर रोज़, सरकारी छुट्टी तक ना पा कर काम करने के बाद भी हमारे पास कोई पहचान पत्र नहीं

है, नाही हमारी नौकरियां पक्की हुई हैं| काम करने के समय चोट आने पर भी हमें दवाई तक का खर्च नहीं दिया जाता था| अक्सर काम करते हुए 8 से 10 घंटे निकल जाते थे| इतना बड़ा होस्टल साफ़ करने के बाद हमें प्रोवोस्ट और वार्डन मैडम का घर भी साफ़ करना पड़ता था, जिसके कोई अलग पैसे नहीं मिलते थे|कभी उनके घर मेहमान आ जाएँ तो हमें और भी देर तक रुकना पड़ता था| अपनी रोजीरोटी के लिए हम यह सब भी हम चुपचाप झेलते रहे| सहनशीलता की हद तक पहुँच कर हमने अपनी समस्याएं बतायीं, लेकिन समाधान की जगह हमें सज़ा दी गयो है|

हमारी हालत का प्रमुख ज़िम्मेदार यह विश्वविद्यालय ही है, जो ऐसे तो ज्ञान की बातें करता है पर दरअसल अन्याय की राह पर चलता है| क्या यह विश्वविद्यालय हमें यही शिक्षा देता है की मेहनत से रोटी कमाने वालों की बेइज्जती की जाए, उनका उत्पीड़न किया जाये, और अगर वह अपने स्वाभिमान के लिए दो बात कहें तो उन्हें सड़क पर ला छोड़ा जाये? हम सब काम करने वाली औरतें हैं, अपना घर अपनी तनख्वाह से चलाते हैं| हमारी नौकरी तो चली गयी है, पर हमारे किराये का बोझ, हमारे बच्चों और रोटी का खर्च वैसा का वैसा है| इन्हीं होस्टलों में से एक का नाम आंबेडकर के नाम पर रखा गया है| उसी के बगल में हमें अभी भी छुआछूत और जाति के नाम पर गालियां सुनने को मिल रही हैं| हम पढ़े लिखे नहीं हैं पर यह घोटाला हमें भी नज़र आ रहा है, तो आपको क्यों नहीं दिख रहा?

हम उम्मीद करते हैं कि हमें इस अन्याय के खिलाफ लड़ने में आप सबका सहयोग मिलेगा!

सप्रेम,
मंजू, विमलेश,शांति, कांता, फूला, पिंकी, पुटुल, आशा